॥ श्री ॥

नियमसार

NIYAMASAARA

आ. कुन्दकुन्द · २वीं शती · अभिलेख ६/९०

श्री जिनचन्द्राचार्य → **आ. कुन्दकुन्द** → श्री उमास्वामी (गृद्धपिच्छाचार्य)

संक्षिप्त परिचय

आचार्य कुन्दकुन्द की अध्यात्म-प्रधान कृति — 'नियम' अर्थात् निश्चय रत्नत्रय; शुद्ध आत्मा के आश्रय से होने वाली निर्मल परिणति का निरूपण।

परमार्थ-प्रतिक्रमण, परम-आलोचना जैसे अधिकारों में मुनि की अन्तरंग साधना का चित्रण इसकी विशिष्टता है।

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

अभिलेख-विवरण

नियमसार — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक ६ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. कुन्दकुन्द; रचना-काल २वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ६५) के अनुसार इनका समय १२७–१७९ है तथा गुरु श्री जिनचन्द्राचार्य। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "समयसारादि ८४ पाहुड" उल्लिखित है। इसी लेखनी से समयसार, प्रवचनसार, पंचास्तिकाय, अष्टपाहुड, बारस अणुवेक्खा भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में षट्खण्डागम, कसायपाहुड, मूलाचार, तत्त्वार्थसूत्र परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

समयसार · प्रवचनसार · पंचास्तिकाय · अष्टपाहुड · बारस अणुवेक्खा

समकालीन ग्रन्थ

षट्खण्डागम · कसायपाहुड · मूलाचार · तत्त्वार्थसूत्र

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति ६ — मूल छायाचित्र

← पंचास्तिकाय

अष्टपाहुड →